विकलांग पुनर्वास के लिए शुरू हुआ सर्वेक्षण

महानगर प्रतिनिधि

सिलवासा

भारतीय रेड क्रॉस विकलांगों को उपकरण, सहायता और पुनर्वास के लिए प्रदेश के सभी गांवों में सर्वेक्षण कर रहा हैं। सोसायटी ने ग्रामीण स्तर के कार्यकर्ताओं की सहायता से विकलांगों का सर्वेक्षण कराने का अभियान चल रहा है।

रेड क्रॉस सोसायटी के सचिव कुलदीप सिंह ने बताया कि कुल आबादी के औसत पांच प्रतिशत लोग विकलांग होते हैं। प्रदेश की जनसंख्या के अनुसार विकलांगों की संख्या 16 से 20 हजार के बीच होनी चाहिए। सोसायटी के पास विकलांगों की संख्या सिर्फ पांच हजार के करीब हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में विकलांग होने के बाद संस्था के पास कोई रिकॉर्ड नहीं है। इन विकलांगों को सहायता देने के लिए उनका पता लगाना आवश्यक हैं। गांवों में विकलांगों की खोज के लिए जनप्रतिनिधियों और ग्रामीण कार्यकर्ताओं की सेवा ली जा रही हैं। कुछ समय पूर्व राष्ट्रीय अस्थि विकलांग संस्थान ने विकलांगों को सस्ते दर पर इलाज के लिए सेमीनार आयोजित किया था, उसमें विकलांगों की आवश्यक जानकारी मांगी थी। अस्थि विकलांग के कुछ मामले ऐसे होते हैं, जिनका ऑपरेशन के बाद इलाज संभव हैं। अस्थि विकलांग संस्थान कोलकाता ने अनेक विकलांगों को नई जिंदगी दी हैं। इस संस्थान ने रेड क्रॉस से भी आग्रह किया था कि विकलांगों का पता लगाकर उनको शारीरिक परिस्थिति की जानकारी दी जाये। इसके बाद रेड क्रॉस ने विकलांगों को पता करके आवश्यक सहायता और उपकरण देने की योजना तैयार की हैं। विकलांगों के लिए स्कूल चालू करने के बाद भी कुछ बच्चे इसका फायदा नहीं ले पाते हैं। प्रदेश के दूधनी, मांदोनी, रांधा और किलवणी पटेलाद के लगभग 25 गांवों में विकलांगों का सही ज्ञान नहीं हैं। इन विकलांगों की खोज के लिए ग्रामीण कार्यकर्ताओं को लगाया गया हैं। विकलांग व्यक्ति को चिन्हित करने के लिए सोसायटी रिकॉर्ड तैयार कर रही हैं। विकलांग घोषित होने के बाद सोसायटी उसे सरकारी उपकरण और चिकित्सा सेवा देने के लिए हरसंभव उपाय करेगी। प्रदेश में अस्थि, वाक एवं श्रवण, दृष्टि विकलांग के अलावा मानसिक विकलांग के मामले अधिक हैं। इनका पता लगाना किसी चुनौति से कम नहीं हैं।

दैनिक भास्कर